शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

मधुबनी लोक चित्रकला –'संरक्षण व प्रोत्साहन'

प्राप्तिः 30.05.2024
स्वीकृतः 10.06.2024

शुभ्रा बरनवाल
शोधार्थी, पेटिंग विभाग
श्रीमति बी०डी० जैन गर्ल्स पी०जी० कॉलेज
(डबरू), आगरा, उ०प्र०
ईमेलः *shubhrabaranwal1@gmail.com*

52

सारांश

भारतीय संस्कृति के विविध आयाम हैं जो हमें भारतीय पारम्परिक जीवन, उत्सव व मान्यताओं से अवगत कराती है। भारत में क्षेत्रों के आधार पर सांस्कृतिक विविधता देखने मिलती है। मानव सभ्यता के प्रारम्भ में इसी संस्कृति का दृश्यमान रूप संगीत व नृत्य थे। समय के साथ मानव विकास के पश्चात् इन सांस्कृतिक माध्यमों ने एक रूप धारण करना प्रारम्भ किया आगे चलकर यह स्वरूप चित्रकला के रूप में विकसित हुआ। वर्तमान में यही चित्रकला भारतीय लोक कला के रूप में जानी जाती है। लोक शब्द से तात्पर्य 'दैनिक जन द्वारा किये गये लोक कार्य', लोक शब्द का शाब्दिक अर्थ 'लोक दर्शने' अर्थात लोक जीवन है। इसी लोक कला के अर्न्तगत देश की अत्यधिक प्रसिद्ध लोक चित्रकला, मधुबनी लोक चित्रकला पर इस शोध अध्ययन के माध्यम से चर्चा की जायेगी, समस्त लोक कलाओं के प्रारम्भ में एक कहानी का वर्णन प्राप्त होता है। इसी प्रकार मधुबनी लोक कला भी एक सुन्दर कथा से प्रारम्भ होती है। अर्थात जब राम व सीता विवाह में राजा जनक द्वारा सर्म्पूण मिथिला क्षेत्र में सीता व राम जी के विवाह के दृश्यों को चित्रित करवाया गया था तभी से मिथिला निवासी इन दृश्यों को चित्रित करना अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना लिए है। परम्परागत रूप में ये चित्रकला समय के साथ विकास कर रही है व इस कला को चित्रित करने वाले कलाकार अपनी मौलिक भावनाओं के साथ अपनी कला में नये प्रयोग कर रहे हैं जिससे इन्हे प्रोत्साहन भी प्राप्त हो रहा है। यह लोक कला अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो रही है जिससे इन्हे प्रसिद्धि के साथ–साथ संरक्षण भी प्राप्त हो रहा है। मिथिला कला के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर कार्य किये जा रहे हैं। अर्थात मधुबनी लोक कला से सम्बन्धित संरक्षण व प्रोत्साहन को इस लघु शोध अध्ययन के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया जायेगा।

मुख्य बिन्दू

मधुबनी लोक कला, लोक चित्रकला, कला का संरक्षण।

उद्देश्य

मधुबनी लोक चित्रकला का दायरा अत्यन्त फैला हुआ है। इसे प्रकाश में लाने व विस्तृत रूप देने में कला विद्वानों, कला संस्थाओं व संगठनों का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समय में भी मधुबनी लोक चित्रकला के प्रसार व संरक्षण हेतु कार्य किये जा रहे हैं अर्थात प्रारम्भ से लेकर वर्तमान तक मधुबनी लोक कला के संरक्षण व प्रचार–प्रसार के योगदानों को इस शोध लेख के माध्यम से अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा।

प्रस्तावना

किसी भी कला का संरक्षण उसके मूल सांस्कृतिक स्वरूप को जिवित रखने के लिए व उसे संसार में स्थाई बनाये रखने के लिए किया जाता है क्योकि किसी भी क्षेत्र की कला उसके सांस्कृतिक स्वरूप का परिचय देती है। भारत में लोक कलाएँ अन्नत हैं, उनमें से प्रमुख मधुबनी लोक कला है जिसने देश–विदेश में अपना परचम लहराया है। मिथिला लोक कला बिहार के मधुबनी, दरभंगा, सहरसा व पूर्णिया जिलों में फली–फूली थी। मधुबनी जिले के जितवारपुर, लहेरियागंज, राँटी, हरिनगर, रसीदपुर, रहिका, राजनगर, सतघारा, सिमरी, सिगियान, हरिपटी, खजौली, भागीरथपुर, सलेमपुर, चतरा, माड़ेर तथा हरिपुर डीहटोल गाँवों में स्त्री–कलाकार नियमित रूप से चित्रकारी करती हैं। इसी प्रकार दरभंगा जिले में बहादुर, भवानीपुर, भरवाड़ा, रामपटी, रानीपुर, सुंदरपुर व खजारपुर तथा सहरसा जिले के महिसी, रैयाम व सीतामढ़ी जिले के भिठठ्ा आदि गाँवों में स्त्री कलाकार मधुबनी लोक चित्रकला में कार्यरत हैं। इन महिला कलाकारों के साथ साथ पुरूष चित्रकार भी चित्राकंन कर रहे हैं। इन कलाकारों व कला के संरक्षण के लिए कुछ सरकारी समितियाँ, स्वयंसेवी कलाकार संघ, सरकारी व गैर सरकारी संगठन, संस्थाओं से इन्हे प्रोत्साहन व सराहना प्राप्त हो रही है। सभी संघों व संस्थाओं द्वारा देश–विदेश में कलाकारों की कलाकृतियों को ऊँचे मूल्यों पर बेचा जा रहा है जिससें कलाकारों को प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है। वर्तमान समय में शिक्षित वर्ग में लोक चित्रकला के प्रति विशेष रूचि दृष्टिगत हो रही है।

उन्नीसवी शताब्दी में पूर्वी भारत में कला जगत में दो विशिष्ट कलारूप दृष्टिगोचर हुए। अधिसंख्य प्रतिभाशाली कलाकारों ने प्रचलित योरोपीय तकनीक अपना ली। वे अपनी चित्रात्मक आकांक्षा की दृष्टि के लिए या जीविका के लिए भारतीय जीवन और परिदृश्य को योरोपीय शैली में चित्रित करने लगे तथा कुछ ने ग्रामीण और धनाढ्य वर्गो के आन्नद के लिए भारतीय संस्कृति और लोक कला के चिरपरिचित चित्र बनाना स्वीकार कर लिया जिन्हें ''बाजार पैटिंग'' कहा गया और इसी समय 'पटुआ चित्रकला' का उद्भव हुआ। अंग्रेज शासक भी इग्लैण्ड से अनेक चित्रकार, मूर्तिकार लाकर भारतीय जन जीवन के रीति–रिवाज तथा जीव और वनस्पति अंकित कराने लगें। आधुनिक चित्रकला में लोकतत्व या लोक चित्रकला का देश समाज तथा संस्कृति में वही स्थान है जो समुद्र में बड़े–बड़े जहाजों के साथ जीवन रक्षा नौकाओं का होता है। उसी प्रकार जब किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति विदेशी आक्रमणों एवं प्रभावों से डूबने उतराने लगती है तो लोक कला उस सभ्यता संस्कृति की रक्षा करती है।[1]

ये कलाकृतियाँ जो आजतक जीवन के विभिन्न पहलूओं से सम्बन्धित रही हैं जिनके विविध स्वरूप भित्ति चित्रण, भूमि चित्रण, लोकचित्र तथा लोक प्रतिभाओं के रूप मे स्र्वत्र जीवन के साथ समाहित हो गये।[2] लोक कलाओं में संस्कृति की साधना का उद्देश्य तो नही है परन्तु कलाकारों ने अपनी पीढ़ियों के लिए अपनी–अपनी कला को जीवित रखा है। विभिन्न अनुष्ठानों एवं रीति–रिवाजों से जुड़ी मिथिला क्षेत्र की मधुबनी कला भारतीय लोक संस्कृति की अक्षुण निधि है। मिथिला की परिस्थितियों से प्रभावित कला घर आँगन में पल्लवित होकर एक दिन शास्त्रीय कला में समन्वित हो गयी।[3] कलाकारों को घरो के आँगनो से लगाव है। जहाँ वे अपने परिवेश में अपनी परम्परा को अपनी तूलिका में अधूरा नही छोड़ पाता, वह किसी न किसी रूप में मुखरित हो उठती है। मधुबनी कलाकार धर्म से प्रेरित हैं। क्योंकि मिथिला जगत जननी सीता जी की जन्मभूमि हैं।[4] इस कारण इस क्षेत्र की समस्त स्त्रियाँ स्वयं के सभी सांस्कृतिक और सात्विक मुल्यों को चित्रित करना अपना धर्म समझती हैं।

मधुबनी लोक कला अपनी विशिष्ठ चित्रण शैली के लिए विश्व विख्यात है। 'सन् 1962 ई. के उपरान्त मुख्य रूप से मधुबनी क्षेत्र स्वयं की अदभुत कला के लिए केन्द्रिय स्थल बन गया। इस लोक कला के विपरण एवं प्रचार–प्रसार का सम्पूर्ण कार्य मधुबनी को केन्द्र में रखकर किया गया। यह लोक कला मिथिला क्षेत्र में ही नहीं वरन् इसका व्यापक प्रचार प्रसार भारत व विश्व के अधिकतर विकसित तथा विकासशील देशों में भी हुआ तथा समाज द्वारा इस अनुपम एवं नवीन चाक्षुस यर्थात् को बड़े रूचि के साथ स्वीकार किया गया।

मिथिला लोक कला के इतिहास व विकास की कहानी अतयन्त रोचक है। ऐसा कहा जा सकता है कि मधुबनी लोक कला का उद्भव एक घटना के पश्चात् होता है। वर्तमान में मधुबनी कला के जीवित स्वरूप के कारण यह कला भारत ही नही बल्कि समस्त विश्व में कला प्रमियों के आकर्षित, प्रेरित व उनमें जिज्ञासा का भाव उत्पन्न कर रही है। मधुबनी चित्रकला को विश्व से परिचित कराने का श्रेय राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मधुबनी कलकार गोदावरी, शशी, सहासुंदरी, ऊषा देवी जी को जाता है। इन चित्रकारों के सुन्दर रंग योजना वाले चित्रण कार्य ताज महोत्सव, दिल्ली कला मेला, सुरजकुण्ड का हस्तशिल्प मेला जो सरकार द्वारा आयोजित थे व प्रमुख आकर्षण का केन्द्र रहे।

सर्वप्रथम मधुबनी लोक चित्रकला को प्रकाश में लाने का श्रेय डब्लू. जी. आर्चर को जाता है। सन् 1934 में डब्लू. जी. आर्चर ने मधुबनी चित्रों के कलात्मक स्वरूप का परिचय दिया। 1937 तथा 1938 दूसरी बार पूर्णियाँ व दरभंगा जिले के आंतरिक भागों का सर्वेक्षण किया व मिथिला में स्थित घरों के भित्ति चित्रों तथा छवि चित्रों का अध्ययन किया था। सर्वप्रथम कला प्रमियों का ध्यान मधुबनी लोक चित्रकला की तरफ आकर्षित करने हेतु डब्लू. जी. आर्चर द्वारा ''मैथिल चित्र'' नामक सचित्र लेख प्रसिद्ध भारतीय कला पत्रिका 'मार्ग' में प्रकाशित किया था। श्रीमति पुपुल जयकर जो अखिल भारतीय हस्तशिल्प प्रोत्साहन और निर्यात बोर्ड की अध्यक्षा थी, यह आर्चर महोदय से प्रेरित होकर मिथिला क्षेत्र का छठें व सातवें दशक के मध्य में भ्रमण किया। इन्होने मिथिला चित्रकारों को प्रोत्साहित व चित्रों का पुनरूत्थान किया। युवा कलाकार मास्टर कुलकर्णी व पटना के कलाकार उपेन्द्रनाथ महारथी ने मिथिला की महिला कलाकारों को कला सामग्री देकर जैसे कागज, रंग देकर

बड़े आकार के चित्र निर्मित करवाये जिसके परिणामस्वरूप जितवारपुर की सीता देवी, ऊषा देवी, यमुना देवी, व राठी की महासुन्दरी देवी को पहचान प्राप्त हुई। यहाँ से मधुबनी लोक कला के प्रचार–प्रसार व संरक्षण का कार्य प्रारम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप मधुबनी चित्रों के विशाल प्रदशर्नी का आयोजन 1973 एवं 1975 में पेरिस में किया गया। यह लोक कला सम्पूर्ण विश्व के कला प्रमियों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित की व लोगो के लिए प्रेरणा स्त्रोत के रूप में अग्रसर हुई, देश विदेश में मधुबनी लोक चित्रकला की लोकप्रियता बढ़ती गयी। मधुबनी चित्रों को पौलेण्ड देश में लाखें रूपयों में खरीदा गया। केन्द्रीय राज्य सरकारों विदेशी पर्यटकों और कला मर्मज्ञों ने इनमें रूचि दिखाई और विगत कुछ वर्षो में मिथिला चित्र परम्परा को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हो सकी।[5] इनकी बढ़ती लोकप्रियता से इन चित्रों की प्रदर्शनियाँ फ्रांस, जर्मन, हॉलैण्ड, अमेरिका, जापान में भी लगाई गयी। प्रसिद्ध फ्रांसीसी समीक्षक वैक्स बैकुआद ले इन चित्रों से प्रभावित होकर एक रंगीन फिल्म बनाई एवं ''द आर्ट ऑफ मिथिला'' पुस्तक लिखी। पटना फिल्म डिवीजन ने भी मधुबनी कलाकारों और चित्रों पर फिल्म बनाई।[6] भारत के विभिन्न महानगरों जैसे दिल्ली, अहमदाबाद के होटलों में चित्रण कार्य करने के लिए मधुबनी कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था। कागज पर चित्रण के साथ – साथ छापांकन विधि द्वारा रेशमी व सूती वस्त्रों पर भी मधुबनी शैली के चित्रों को छापा गया। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में ये मधुबनी चित्र सजावटी व उपयोगी वस्तुओं, रेलवे स्टेशनों की दीवारों पर, ट्रेन पर, अनेक वस्त्रों, पत्र–पत्रिकाओं व पुस्तकों आदि स्थानों पर चित्रित होने का प्रमाण देती है। इसी क्रम में मधुबनी शैली में कार्यरत रही कलाकार श्रीमति जगदम्बा देवी को 1982 में राष्ट्रीय पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया गया साथ ही महासुन्दरी देवी व सीता देवी को भी राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मधुबनी लोक कला का समय के साथ साथ प्रसार होता जा रहा है। यह भारत देश के लिए यह सौभाग्य का विषय है कि भारत लोक कला परम्परा से समृद्ध है व मधुबनी लोक चित्रकला इसका प्रमुख भाग है। इसकी प्रसिद्धि के पूर्व में यह लोक कला पारिवारिक कल्याण, अनुष्ठान, वैयक्तिक आनन्द व विशेष रूप में धार्मिक, पौराणिक और शास्त्रीय विषयों से प्रेरित थी परन्तु विश्व से परिचित होने के पश्चात् यह कला मधुबनी कलाकारों के लिए उनकी पहचान व मुख्य आजिविका का माध्यम प्रेषित हुई है।

इस शोध लेख के माध्यम से उन सरकारी व गैर सरकारी संगठनो के योगदानों का वर्णन किया जायेगा जिससे मधुबनी लोक कला को विश्व कला में अग्रसर होने में सहायता प्राप्त हुई। जिसके अर्न्तगत विकास आयुक्त हस्तशिल्प व एन.जी.ओ. द्वारा किये गये महत्वपूर्ण प्रयास है। विकास आयुक्त हस्तशिल्प (Development Commissioner Handicrafts) बाजार विस्तार केन्द्र बिहार के मधुबनी जिले के सबसे पुराने केन्द्रो में से एक है। 1978 से, इसने मधुबनी चित्रकला के चित्रकारों के लिए कई प्रशिक्षण योजनाएं लागू की हैं। वर्तमान में संभावित इच्छुक उम्मीदवारों को छह महीने का प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान किया जाता है। जितबारपुर गांव के लगभग 3500 चित्रकार इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का भाग रहे हैं। बिहार में कई सांस्कृतिक गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने के लिए कई कार्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनमें से विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार बिहार में अपने विभिन्न शिल्पों को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय है। बिहार में

38 प्रशिक्षण केन्द्र कार्यरत हैं, जिनमें 21 केन्द्र उत्तर बिहार व 17 दक्षिण बिहार में स्थित हैं। इन केन्द्रों का उद्देश्य कौशल विकास, क्षमता निर्माण हेतु वित्तीय सहायता व जागरूकता सह–प्रशिक्षण कार्यशाला, सेमिनार आदि के माध्यम से विस्तार शिक्षा शामिल है। मधुबनी कला के संरक्षण के लिए कई एन.जी.ओ. कार्यरत हैं जिनमें उपेन्द्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है, इसकी स्थापना 1956 में हुई। इस संस्थान की स्थापना अनुसंधान, प्रशिक्षण व बिहार के लुप्त शिल्पों का संरक्षण हेतु हुई साथ ही इनका उद्देश्य कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कौशलों के उन्नयन के माध्यम से शिल्प व शिल्पकारों के विकास के लिए एक समर्पित हैं। इस संस्थान के संग्रहालय में बिहार की हस्तशिल्प कला का वृहद संग्रह है जिसमें मधुबनी चित्रों को भी संग्रहित किया गया है। यह संग्रहालय शिल्प वस्तुओं का संग्रह करने के अतिरिक्त छः माह की रचनात्मक कार्यशाला का भी आयोजन करता है जिसमें छात्रों को अनुभवी चित्रकारों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे कला का प्रचार प्रसार व संरक्षण भी होता है।

संस्कृति मंत्रालय युवा कलाकारों को देश की साहित्यिक कला व शिल्प योजनाओं जैसे प्रयासों के माध्यम से बढ़ावा दे रहा है। मंत्रालय द्वारा युवा कलाकारों को छात्रवृति व पुरस्कार भी प्राप्त हो रहे हैं। यह छात्रवृति विभिन्न कला श्रेणियों में प्रदान होती है जिसमें लोक गीत, लोक संगीत, लोक नाट्य, लोक नृत्य, व अन्य उपश्रेणियाँ भी शामिल हैं। इनमें लोक चित्रकला का उल्लेख प्राप्त नही होता, संमक से यह ज्ञान होता है कि लोक चित्रकारों को बहुत सीमति छात्रवृतियाँ प्राप्त होती हैं।

विकास आयुक्त हस्तशिल्प, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय व हस्तकला अकादमी का मधुबनी चित्रकला के इतिहास में विशेष उल्लेख है। प्रसिद्ध मधुबनी कलाकार स्वर्गीय गंगा देवी द्वारा संग्रहालय की दीवारों पर भित्ति चित्रित किया गया था। संग्रहालय के नवीनीकरण में इस प्रसिद्ध भित्ति चित्रों को नष्ट कर दिया गया।

बिहार संग्रहालय की स्थापना 2015 में हुई। इस संग्रहालय के सबसे महत्वपूर्ण खण्ड में प्रसिद्ध अखिल भारतीय कलाकारों के समकालीन कला रूपों के प्रदर्शन के लिए समर्पित है। दूसरा खण्ड बिहार कला को समर्पित है।

मिथिला संग्रहालय, टोक्यो, जापान, यह संग्रहालय मधुबनी कला के संरक्षण व प्रसिद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया क्योकि यहाँ मधुबनी कलाकारों के चित्रो का वृहद संग्रह है। इस संग्रहालय की स्थापना सन् 1982 ई. में टोक्यो के नागरिक हासेगावा द्वारा की गयी थी, यह एक संगीतकार व कला पारखी थे। इन्हे मधुबनी चित्रकला की जानकारी एक छात्रों के समूह से प्राप्त हुई जो भारत के मधुबनी जिले से खरीदी गई कलाकृतियों को प्रदर्शित करने में इच्छुक थे। भारत मे मधुबनी कला की मौलिकता समाप्त हो रही थी। हासेगावा में मधुबनी की मौलिकता को उसके मूल रूप में संरक्षित किया। हासेगावा द्वारा भारत का दौरा किया गया व साथ ही कलाकारों को प्रोत्साहित किया। वर्तमान समय में मिथिला संग्रहालय में 15,000 उत्कृष्ठ मधुबनी चित्रों को संग्रहित किया गया है। सन् 1988 ई. में मधुबनी कलाकार मिथिला संग्रहालय का भ्रमण किए जिनमें प्रमुख रूप से गंगा देवी, जगरीहंबा देवी, शारती देवी, बउवा देवी व कर्पूरी देवी थे। हासेगावा ने एक गैर लाभकारी संगठन के साथ विलय कर भारतीय संस्कृति को लोकप्रियता के लिए अभियान प्रेषित किया।

मिथिला अस्मिता यह एक गैर लाभकारी पंजीकृत संगठन है जिसकी स्थापना वर्ष 2010 में डॉ. श्रीमति गौरी मिश्रा के मार्गदर्शन में युवा उद्यमियों के एक समूह द्वारा की गई थी जो मधुबनी लोक कला के प्रचार प्रसार के लिए कार्यरत है। यह संगठन ग्राहकों की विशिष्ठ माँग को प्राप्त करता है। पारम्परिक लोक कलाकारों को विपरण व प्रचार प्रसार में विभिन्न सहायता प्रदान करता है। वर्तमान समय में यह वन–स्टॉप विपरण मंच निर्मित करने का प्रयास कर रहा है जो संभावित खरीदारों व कलाकारों के मध्य एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। इस संघ द्वारा कला दीर्घाओं, ऑनलाइन व ऑफलाइन मंचों, प्रदर्शनियों व कार्यशालाओं जैसे विपरण के विभिन्न माध्यमों द्वारा हजारों ग्रामीण महिला कलाकारों को आजीविका प्रदान की है। संगठन की स्वतंत्र शाखा द्वारा कई गैर लाभकारी पहल की गई है। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल 'लाइट ऑफ आर्ट' है, इसका उद्देश्य सक्रिय व समर्पित मिथिला कलाकारों को प्रकाश स्त्रोत प्रदान करना है। कलाकारों की आर्थिक स्थिति दयनीय थी जहाँ इन्हे अपने कार्यस्थल पर पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था उपलब्ध नही थी। अब तक इस पहल के तहत निगमित व कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सहयोग से 216 घरों का निर्माण किया गया है।

मिथिला चित्रकला संस्थान व मिथिला ललित संग्रहालय, मिथिला कला को बढ़ावा देने, कलाकारों को मधुबनी कला में व्यवस्थित अध्ययन प्रदान करने, मधुबनी लोक कला को व्यवसायिक स्वरूप देने व मिथिला कलाकारों को अपनी कला का एक समृद्ध स्थान प्रदान करने के लिए निर्मित किया गया है। इस संस्थान का उद्घघाटन का कार्य 2022 में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा पूर्ण हुआ। संस्थान में डीग्री, डिप्लोमा कोर्स भी उपलब्ध हैं साथ ही प्रसिद्ध मधुबनी कलाकारों के चित्रों का संग्रह भी है। मधुबनी कलाकार गोदावरी दत्त का प्रसिद्ध चित्र अर्द्धनारीश्रवर मिथिला ललित संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है।

'मिथिला पेंटिंग ग्राम विकास परिषद' के संचालक षष्ठिनाथ झा का कहना है कि 70 प्रतिशत कलाकार स्वयं व्यापार संचालन कर रहे है। कालेज जाने वाली गांवो की बालिकाएं अब आर्ट, डिजाइनिंग और मार्केटिंग का प्रशिक्षण ले रही हैं। पूरा व्यापार मोबाइल व लैपटाप से हो रहा है।[7] 2023 में भारत मंडपम, दिल्ली में आयोजित जी–20 सम्मेलन में लहेरियागंज की राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मधुबनी कलाकार शान्ति देवी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को चंद्रयान चित्र भेट किया था। इस सम्मेलन में शान्ति देवी ने कहा कि मधुबनी चित्रकला ने ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया है। वर्तमान समय में हमारे चित्रों को विदेश में अच्छे मूल्य देकर खरीदा भी जा रहा है जो एक सकारात्मक आर्थिक बदलाव है।

100 क्राफ्ट्स यह एक ऑनलाइन पोर्टल 100krafts.com के नाम से है। इस पोर्टल के माध्यम से संभावित ग्राहक व ऑनलाइन मंच के मध्य एक अंतराफलक है जिसमें मिथिला कलाकारों को सरलतापूर्वक चित्रण कार्य उपलब्ध होता है व ग्राहकों को अपनी आवश्यकतानुसार कलाकार उपलब्ध होते हैं। इस ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से ग्राहक स्वयं के ऑर्डर बताते हैं व पोर्टल के अधिकारी मध्यस्थ के रूप में न्यूनतम राशि लेते हुए कलाकारों का ऑर्डर प्रेषित करते हैं। इस पोर्टल की सहायता से कलाकारों की आर्थिक स्थित को सुदृढ़ करने का प्रयास है।

मिथिला कला केन्द्र, 20वी. सहस्त्राब्दी के अन्त में मधुबनी जिले की तीन बहनों बन्दना झा, मनीषा झा व पूजा झा ने मिथिला कला को बढ़ावा देने के लिए प्रारम्भ किया। इनका उद्देश्य मिथिला कला को जीवित स्वरूप देना, जागरूक कार्यक्रमों के माध्यम से कला का विस्तार करना तथा मिथिला क्षेत्र की महिला कलाकारों को उत्कृष्ठ प्रतिफल देना, यह केन्द्र पिछले 20 वर्षो से प्रदर्शनियाँ व कार्यशालाओं का आयोजन कर रहा है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन पोर्टल से ग्राहको के समक्ष एक मध्यस्था के रूप में कार्य कर रहा है, जो अलंकरण के उद्देश्य से अपनी आवश्यकतानुसार कलाकारों को कार्य उपलब्ध कराता है। उन्होने हस्तनिर्मित साड़ियाँ, रूमाल, दुप्पट्े आदि जैसे कलात्मक ऑर्डर को पूरा करने के लिए पार्षद के साथ सहयोग किया है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से मिथिला कला का दस्तावेजीकरण किया गया। इसमें 2006 से 2011 के मध्य मिथिला की 200 से अधिक महिला कलाकारों ने भाग लिया जिसमें विभिन्न जातियों व समुदायों के कलाकारों को एक मंच पर कार्य करने का अवसर प्रदान प्रदान हुआ।

क्राफ्टवाला व मिथिला स्कूल ऑफ आर्ट, क्राफ्टवाला एक ऑनलाइन मंच है, जो राकेश कुमार झा की एक पहल है। क्राफ्टवाला नवीन स्टार्टअप प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के रूप मे पंजीकृत है। यह मंच कलाकार और ग्राहक को एक साथ एक स्थान देता है। यह पोर्टल शिल्प उत्पादों को खरीदने के लिए एक ऑनलाइन स्थान है, जो सम्पूर्ण भारतीय क्षेत्र से विभिन्न स्वदेशी आदिवासी और लोक संस्कृतियों से प्राप्त किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ विभिन्न कलाकारों के कार्य उपलब्ध हैं जिन्हें पोर्टल के माध्यम से खरीदा जा सकता है। इनका उद्देश्य कलाकारों के लिए नवीन अवसरों को निर्मित करना तथा उनकी कलाकृतियों की मांग का विस्तार करना, साथ ही उचित मूल्य मंच का निर्माण करना।

मिथिला कला संस्थान के बंद होने के पश्चात् राकेश झा ने 2019 में मिथिला स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना की, यह मधुबनी जिले में टाउन क्लब मार्ग पर स्थित है। मधुबनी कलाकार दुलारी देवी संस्थान की प्रशिक्षण व मुख्य चित्रकार हैं। संस्थान उभरते युवा कलाकारों को प्रेरित करने के लिए प्रमुख मधुबनी कलाकारों व विद्वानों को आमंत्रित करता है। संस्थान द्वारा कई प्रतिष्ठित कलाकारों को सम्मानित किया गया है। इसी प्रकार विभिन्न कला संगठन व संस्थान मधुबनी लोक चित्रकला के उज्जवल भविष्य हेतु निरन्तर कार्यरत हैं। मधुबनी लोक कला के उभरते स्वरूप से लेकर वर्तमान तक इसके संरक्षण के लिए विभिन्न पहलुओं पर कार्य किया जा चूका है तथा वर्तमान में भी अनेक पहलुओं को निष्पादित किया जा रहा है। अर्थात जो चित्रण कार्य घरों की दीवारों तक सीमित थे। वर्तमान में उन्ही चित्रों ने महत्वपूर्ण प्रयासों की सहायता से स्वयं का अन्तहीन दायरा निर्मित कर लिया है। इन चित्रों की बढ़ती हुई लोकप्रियता व मांग ने इसे विश्व कला बाजार से जोड़ दिया है। सम्पूर्ण अध्ययन के पश्चात् प्रस्तुत लेख के माध्यम से मिथिला लोक कला के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदानों को इंगित किया गया जो वर्तमान में मधुबनी लोककला को एक समकालीन कला के रूप अपना परचम लहराने मे सहायक सिद्ध हुआ है।

संदर्भ

1. अमन., अवधेश. (1992). मिथिला की लोक चित्रकला सफलताएँ–असफलताएँ. ललित कला अकादेमीः नई दिल्ली।

2. शर्मा, डॉ. नीलम. (2015). मिथिला की लोक चित्रकला एवं व्यवसायीकरण. *भारत की लोक कलाएँ.* विजुएल आर्टः ड्राईंग एवं पेंटिंग विभाग रघुनाथ गर्ल्स पी. जी. कॉलेजः मेरठ, उ.प्र.।
3. शर्मा, डॉ. नीलम. (2015). मिथिला की लोक चित्रकला एवं व्यवसायीकरण. *भारत की लोक कलाएँ.* विजुएल आर्टः ड्राईंग एवं पेंटिंग विभाग रघुनाथ गर्ल्स पी. जी. कॉलेजः मेरठ, उ. प्र.।
4. शर्मा, डॉ. नीलम. (2015). मिथिला की लोक चित्रकला एवं व्यवसायीकरण. *भारत की लोक कलाएँ.* विजुएल आर्टः ड्राईंग एवं पेंटिंग विभाग रघुनाथ गर्ल्स पी. जी. कॉलेजः मेरठ, उ. प्र.।
5. शर्मा, डॉ. नीलम. (2015). मिथिला की लोक चित्रकला एवं व्यवसायीकरण. *भारत की लोक कलाएँ.* विजुएल आर्टः ड्राईंग एवं पेंटिंग विभाग रघुनाथ गर्ल्स पी. जी. कॉलेजः मेरठ, उ. प्र. पृष्ठ **224.**
6. शर्मा, डॉ. नीलम. (2015). मिथिला की लोक चित्रकला एवं व्यवसायीकरण. *भारत की लोक कलाएँ.* विजुएल आर्टः ड्राईंग एवं पेंटिंग विभाग रघुनाथ गर्ल्स पी. जी. कॉलेजः मेरठ, उ. प्र. पृष्ठ **224.**
7. Pandey, Ajay. (2023). Aayojnon se Madhubani Painting ka Badh Raha Bajaar. Dainik Jagran.
8. Ansari, M.D., Alam, Iftekhar. (2020). Impact of Mithila Folk Art: Emergence and Transformations. Department of Fine Arts Aligarh Muslim University: Aligarh.